जनवरी-फरवरी 2023

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

मोरंगा

बाल पत्रिका

इस बार

खेल खिलाड़ी

5 फुटबॉल का डर

उड़ान

7 कोयल आई / चोर-मोर

8 सवाई माधोपुर जिला हमारा

9 एक थी नानी

10 गर्मी आई

11 काँच की चुड़ियाँ

12 कुत्ता और किसान

ज्ञान विज्ञान

14 मैग्नीशियम

जोड़-तोड़

15 गणित का डर

कलाकारी

18 पावभाजी

बात लै चीत ले

19 सेठ और व्यापारी

21 माथापच्ची/हीहीही-ठीठीठी

22 कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

प्रिया गुर्जर, कक्षा-6,
राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय कटार

सम्पादन : राजेश कुमावत
सहयोग : उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
डिज़ाइन : अश्विनी कुमार पंकज
प्रूफ़ : सुरेश चंद
वितरण : लोकेश राठौर
आवरण चित्र : **वर्षाना**, कक्षा-4, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय फरिया
वर्ष 14 अंक 151-152

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन-आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस-नीदरलेण्ड, व एच.टी. पारेख के सहयोग से हो रहा है।

प्रबंधन
विष्णु गोपाल
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

पत्रिका का पता
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन: 07462-220957

पिंकेश गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर-सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम-1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरुआत वर्ष 2004 में गाँव-जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरुआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे बढ़ाया। इसके पश्चात 2007 में बोदल गाँव में, 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला की सफलतापूर्वक शुरुआत की गई। ये तीनों उदय पाठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानवरों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे अधिक प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है, जो इनके रहन-सहन, खान-पान, आजीविका, संस्कृति, रीति-रिवाज, बोली-भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढ़ियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल

भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खौखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस-पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम - 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष-2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुँचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

धन्यवाद।

सुनीता गुर्जर, कक्षा-6, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय पादड़ा विस्थापित

खेल खिलाड़ी

फुटबॉल का डर

आरती, उम्र-11 वर्ष,
बावरी बस्ती

मेरा नाम चेतराम गुर्जर है। हमारे स्कूल में एक पीरियड़ खेल का जरूर आता है। सभी बच्चों की मनसा यही होती थी कि किसी विषय का कालांश भले ही छूट जाए किन्तु खेल का कालांश कभी नहीं छोड़ते थे। मेरा भी मन तो फुटबॉल खेलने का बहुत होता था किन्तु हमेशा डर लगता था। फुटबॉल रोकने की हिम्मत ही नहीं कर पाता था। शायद इसीलिए मैं अक्सर मैदान में जाने की बजाय दूर से ही अपनी कक्षा के बच्चों को फुटबॉल खेलते हुए देखता रहता था। कभी-कभार मैदान में बच्चे कम होते तो एक टीम बनाने के लिए मुझे भी बुला लिया जाता था और एक लाइन में खड़े रहने के बाद में इंतजार ही करता रहता था कि मुझे अपनी टीम में कौन शामिल करेगा। आखिरकार जब सभी बच्चे अपनी टीम में जा चुके होते हैं तब सबके अंत में उदासी भरे चेहरे से मुझे भी किसी न किसी टीम में चुन लिया जाता था। मैं शुरु से ही एक कमजोर खिलाड़ी था। मुझे इस कारण अंतिम में मांगते थे। इस वजह से मैं चिंतित भी था। इस साल हमारे स्कूल में पृथ्वीराज जी सर आये। अब सभी बच्चों को वो ही खेल खिलाने लगे और तो और वो बच्चों को खेल खिलाने के साथ-साथ खुद भी बच्चों के साथ खेला करते थे। वो एक फुटबॉल के खिलाड़ी हैं। शायद उनका सबसे पसंदीदा खेल भी फुटबॉल ही है। यों तो हमारे पृथ्वीराज जी सर सभी खेल बहुत ही अच्छे से खेलते और खिलाते भी हैं। खेलों के प्रति उनकी रुचि बहुत ही गहरी दिखाई पड़ती है। शायद इसीलिए स्कूल में सबसे पहले वो ही खेल मैदान के किसी कोने में कुछ न कुछ करते हुए दिखाई देते थे। उसके बाद धीरे-धीरे बच्चे भी मैदान में एकत्रित हो जाते थे और क्या रोज की तरह मैदान के तीन-चार चक्कर दौड़ लगाना, योग करना और फिर फुटबॉल का अभ्यास करना शुरु हो जाता। था। पृथ्वीराज जी रोज सुबह मैदान की खेल गतिविधियों के बाद गोल घेरे में बच्चों को बैठाना नहीं भूलते थे। वो रोज खेलने वाले बच्चों की उपस्थिति मैदान में ही कर लेते थे और देखते थे कि कौनसा बच्चा आया है और खेला भी है और कौन आया तो है पर खेला नहीं है। अक्सर खेलों की जरूरत पर बातचीत करते हुए बच्चों को खेलने के लिए प्रोत्साहित

भी किया करते थे। कुछ ही दिनों में सर की नजर मुझ पर आकर टिकने लगी थी। हो न हो वो जब तो मुझसे दौड़ के पूरे चक्कर नही होने पर मेरे साथ ही दौड़ लगाते थे। सर कहते थे कि बस थोड़ा सा और ... बस आधा ही चक्कर बचा है, धीरे-धीरे इसे भी पूरा कर दे।। ऐसा करने पर मेरे तीन चक्कर पूरे होने लग गए थे। इसी प्रकार योग में भी कई बार मुझे ही सर्कल के बीच में खड़ा करके सभी बच्चों को योग करवाने की जिम्मेदारी भी दी जाने लगी और मेरे साथ ही खुद भी सर्कल में बिना मांगे भी मदद के लिए मैयार दिखते थे। इसी के साथ फुटबॉल के खेल के अभ्यास में भी ऐसा ही दिखाई देने लगा। हम सब रोज खेलने आते हैं तो सर हमें अच्छी प्रेक्टिस करवाते हैं। समय धीरे-धीरे निकलता रहा और हम नियमित सुबह और शाम खेलों की प्रेक्टिस करने लग गये। सबसे पहले सर ने हमें फुटबॉल रोकना सिखाया। सब बच्चे अच्छी तरह फुटबॉल को रोकते थे। मुझसे रोकनी नहीं आती थी। मैं रोकता था तो मुझे डर लगता था कि सर ने कह रखा था जो नहीं रोकेगा वह मैदान का चक्कर लगायेगा। फिर मेरी बारी आई। फुटबॉल मुझसे नहीं रुकी और पीछे निकल गई। मुझे एक चक्कर लगाना पड़ा। फिर सर ने कहा आज मैं तुम्हें फुटबॉल रोकना सिखाऊंगा सर ने कहा, फुटबॉल रोकते समय पैर को थोड़ा ढीला रखना चाहिए और पांव को बॉल के ऊपर नहीं रखना चाहिए। फिर कहा यह प्रेक्टिस वापस करो तो हम सबने की। फिर मेरी बारी आई और मैंने उसी तरीके से पांव (पैर) को लिया तो बॉल रुक गई और सर ने कहा सही रोकी है, इसी प्रकार अभ्यास करते रहो। कई बार मेरे से फुटबॉल नहीं रुकती तो टोंक भी देते थे कि फुटबॉल में हवा ही तो है इससे लगेगी थोड़ी, फुटबॉल को रोकने की कोशिश तो कर। मैं कोशिश करता कभी फुटबॉल रुकती कभी नहीं भी रुकती किन्तु अब रोज मैदान में फुटबॉल रोकने की विविध गतिविधियाँ करवाई जाने लगी। कभी सर्किल में बच्चों को खड़ा करके फुटबॉल को रोकना तो कभी लम्बे-छोटे शोटों को पैर से रोकने का अभ्यास किया जाने लगा। अब मैं रोकना सीख गया और अब मैं प्रत्येक शोट को रोकता हूँ।

चेतराम गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

रामलखन मीना, कक्षा-6, फेलोशिप सेंटर हिरामन की ढाणी

उड़ान

अनुष्का मीना, कक्षा-1,
फेलोशिप सेंटर खाण्डोज

कोयल आई

कोयल आई कोयल आई
काली-काली कोयल आई
कू कू करती कोयल आई
कभी पेड़ पर कभी डाल पर
मंडराती इतराती कोयल आई
काली-काली कोयल आई
मीठी-मीठी बोली उसकी
सबको वह सुनाती आई
कोयल आई कोयल आई।

गोलमा गुर्जर, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

चोर-मोर

जंगल में जब नाचे मोर
रामपुरा में बोले चोर
उसमें एक है आदमखोर
चोरों ने फिर खाई बोर
खा के सब बोराये चोर
आदमखोर को ले गये मोर।

शीतल बैरवा, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

सवाई माधोपुर जिला हमारा

सोनू बैरवा, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

देखो दुनिया का नजारा
सवाई माधोपुर जिला हमारा
रणथम्भौर है जिसमें प्यारा
देखो दुनिया का नजारा
सवाई माधोपुर जिला हमारा
सबको देता है सहारा
नाहर, बघेरा घूमें सारा
देशी-विदेशी घूमे सारा

शोलेश्वर और खटोला वाला
विश्व प्रसिद्ध गणेश मतवाला
सबको लगता है वह प्यारा
तारागढ़ का किला निराला
बिराजे जिसमें वैजयंती मालाकरते थे धमाल
दादी ने उसको पाला
दादा बन गया काला।

मीनाक्षी बैरवा, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

एक थी नानी

गौरा, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

एक थी नानी
नानी थी मोटी
नानी ने बनाई रोटी
रोटी थी गोल
नानी ने खेला फुटबॉल
फुटबॉल मारी लम्बी
आ गई बुआ खम्बी
बुआ लाई पराठा
नानी ने लगाया चांटा
चांटा पड़ा जोर से
मामा आया इंदौर से
इंदौर से लाया समोसा
समोसा था चरका
बाई ने पीया पानी
खत्म हुई कहानी।

रामवीर गुर्जर, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

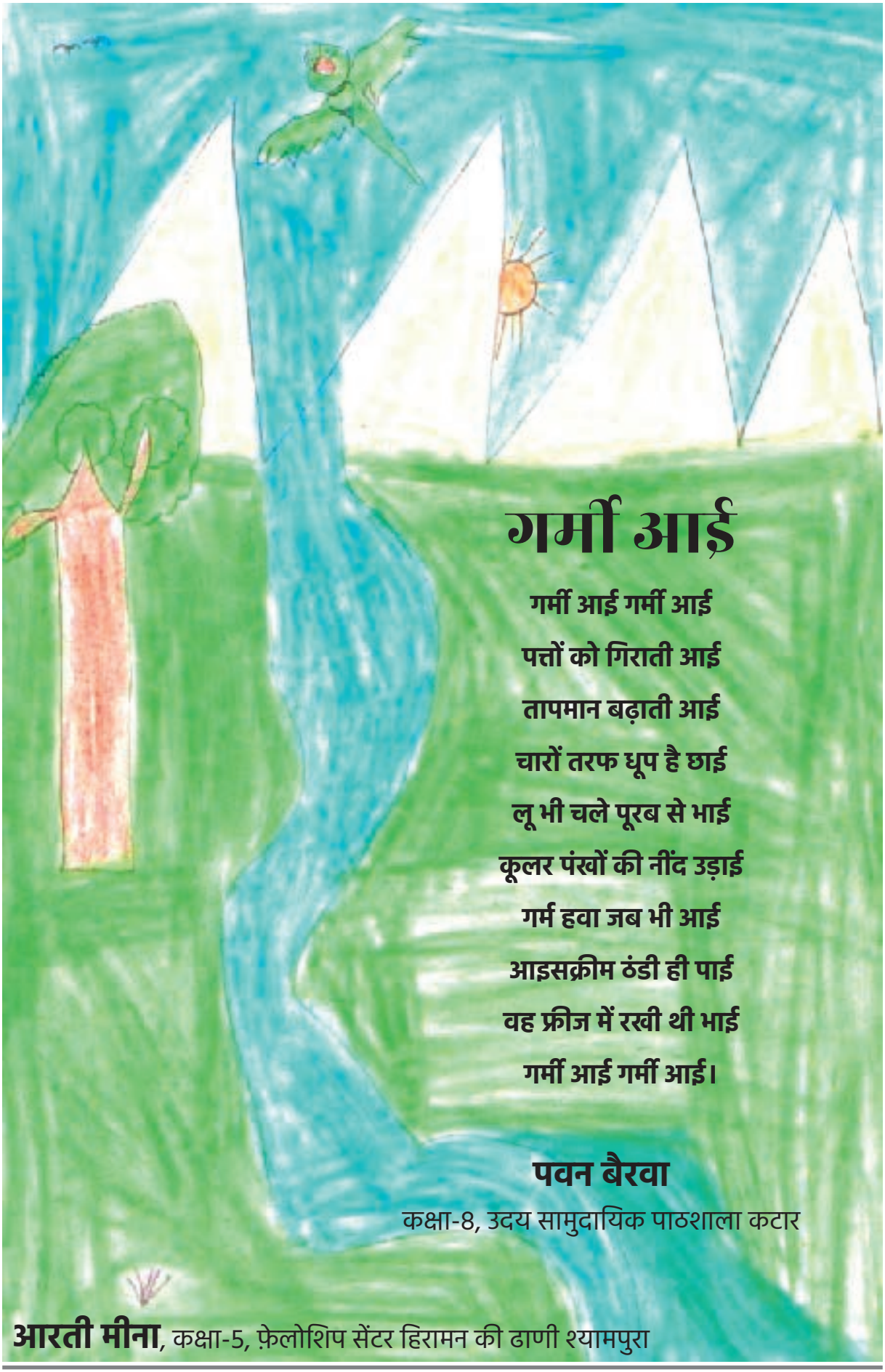

गर्मी आई

गर्मी आई गर्मी आई
पत्तों को गिराती आई
तापमान बढ़ाती आई
चारों तरफ धूप है छाई
लू भी चले पूरब से भाई
कूलर पंखों की नींद उड़ाई
गर्म हवा जब भी आई
आइसक्रीम ठंडी ही पाई
वह फ्रीज में रखी थी भाई
गर्मी आई गर्मी आई।

पवन बैरवा
कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

आरती मीना, कक्षा-5, फ़ेलोशिप सेंटर हिरामन की ढाणी श्यामपुरा

काँच की चुड़ियाँ

एक बार की बात है। एक गाँव में राजवीर नाम का एक गरीब आदमी रहता था। उसे चुड़ियाँ बनाने का बड़ा शौक था। परन्तु गाँव में किसी को भी पता नहीं था कि राजवीर चुड़ियाँ बनाता है। राजवीर सोचता था कि मेरी जैसी चुड़ियाँ कोई नहीं बनाता है। वह घर में बैठकर चुड़ियाँ बनाता और उन्हें घर में सजा देता। उसका घर अंदर से बिल्कुल राजा-महाराजा के महल जैसा लगने लगा था। उसके घर में कांच-ही कांच लगे हुए थे तथा चुड़ियाँें से सजा हुआ था। जब घर की सारी दिवारें चुड़ियाँें से भर गई तो उसने फर्स पर भी चुड़ियाँ बिछा दी। कांच की चुड़ियाँ फर्स पर बहुत ही चमक रही थी। कोई सामग्री लेने के लिए जब वह चलने लगा तो उसे ध्यान नहीं रहा की फर्स पर चुड़ियाँ बिछी हुई हैं। उसने चुड़ियाँें पर पैर रख दिया जिससे वे चुड़ियाँ टूट गई। कांच की चुड़ियाँ टूटकर राजवीर के पैरों में चुभ गई जिसकी वजह से उसके पैरों से खून निकलने लगा। दर्द के मारे वह वहीं पर बैठ गया जिसके कारण उसके हाथों और पैरों में भी चुड़ियाँ चुभ गई। उसके हाथ-पैरों में से खून निकलने लगा। खून निकलता देख वह बेहोश हो गया। थोड़ी देर बाद जब गाँव का धोबी उसके घर कपड़े लेने आया तो उसने राजवीर को बेहोश देखा और सारे घर में कांच की चुड़ियाँ बिछी हुई देखी। उसने तुरन्त गांव वालों को सूचना दी। गांव वालों की मदद से राजवीर को अस्पताल लेकर गये जहाँ तीन दिनों तक उसका ईलाज किया गया। फिर जब वह सही हो गया तो उसे वापस घर लाया गया। घर लाने से पूर्व उसके घर की सारी चुड़ियाँें को इकट्ठा कर लिया गया था। राजवीर इन चुड़ियाँें को बेचने के लिए बाजार में चला गया। राजवीर की चुड़ियाँ बहुत ही संुदर होने के कारण जल्द ही बिक गई और उसे बहुत सारे पैसे मिले। फिर राजवीर ने रानी नाम की एक सुंदर लड़की से शादी कर ली। अब राजवीर अपनी पत्नी के साथ मिलकर रंग-बिरंगी, सुंदर-सुंदर चुड़ियाँ बनाने लगा। उसी चुड़ियों को गाँव की ही नहीं दूसरे गाँवों की महिलायें भी खूब पसंद करने लगी थी। इसलिए उसने बाजार में एक दुकान खोल ली। अब दोनों चुड़ियाँ बनाकर खुशी से अपने जीवन का गुजारा करने लगे।

केशव गुर्जर, कक्षा-3,
उदय सामुदायिक
पाठशाला गिरिराजपुरा

प्रिया गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

कुत्ता और किसान

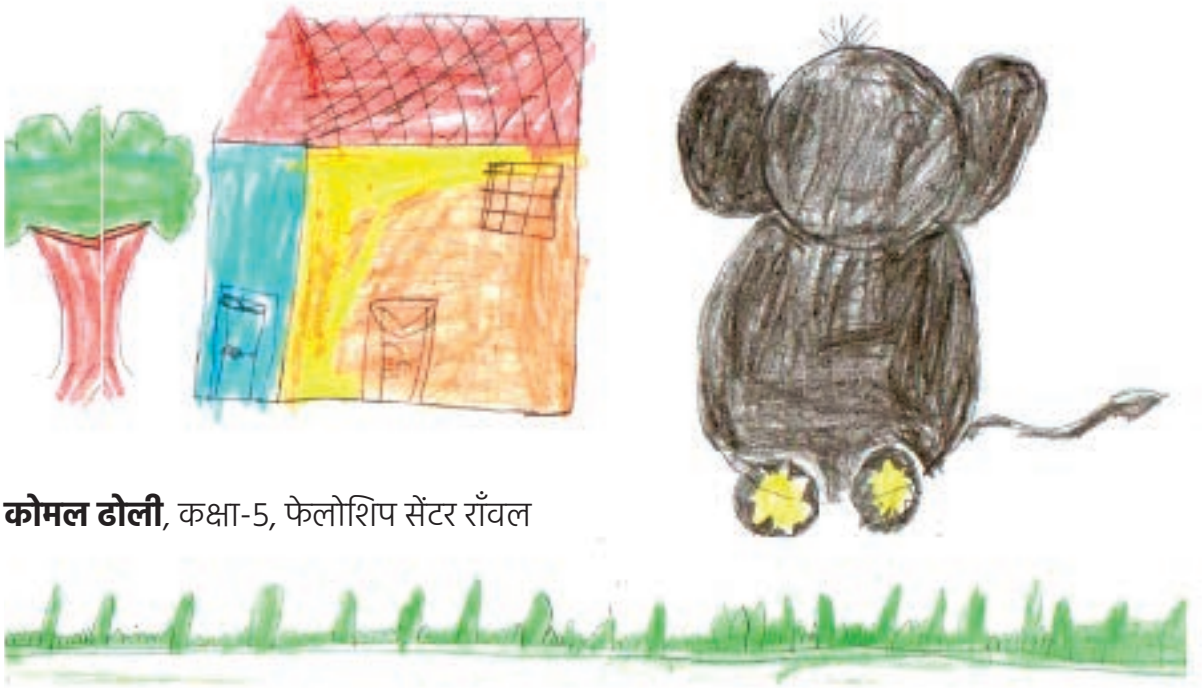

कोमल ढोली, कक्षा-5, फेलोशिप सेंटर राँवल

सर्दियों के दिन थे। जब किसान अपने खेतों की रखवाली के लिए जा रहा था तभी उसने एक गड्ढे में चिल्लाते हुए एक कुत्ते को देखा। कुत्ता बहुत ही जोर-जोर से चिल्ला रहा था और घबराया हुआ दिखाई दे रहा था। किसान ने देखा कि यह कुत्ता जरूर इस गड्ढे में गिर गया और उसके पैर में भी चोट थी। किसान ने उस कुत्ते को बाहर निकाला और बड़े ही लाड़-प्यार से दुलारा और उसको देखा। देखने पर पता चला कि उसके पैर में चोट का निशान भी था। उसने उसके पैर में पट्टी की और उसको खाना खिलाया। थोड़े ही दिनों में कुत्ता ठीक हो गया और तंदुरूस्त भी हो गया। अब रोज वह किसान के साथ रखवाली के लिए जाता और जो भी जानवर खेतों में चरने के लिए आते है उनका पीछा करता। ऐसे करके वह खेत की रखवाली भी किया करता था। यह देखकर किसान भी खुश होता था और अब उन दोनों में बहुत ही अच्छी दोस्ती हो गई। एक रात की बात है सभी सो रहे थे और कुत्ता बरामदें के बाहर ही बैठा हुआ था कि अचानक रात के समय में चोर आए और चोरी करने के लिए घर में घुसने ही लगे तभी कुत्ते ने भौंकना शुरु किया और अपने मालिक को जगा दिया। मालिक ने यह देखकर गाँव वालों को आवाज लगाई और बहुत सारे लोग वहां पर आ गए और चोरों को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया। यह देखकर किसान बहुत खुश हुआ और कुत्ते के सर पर हाथ बड़े ही प्यार से फेरा।

कोमल मीना, कक्षा-3, फेलोशिप सेंटर राँवल

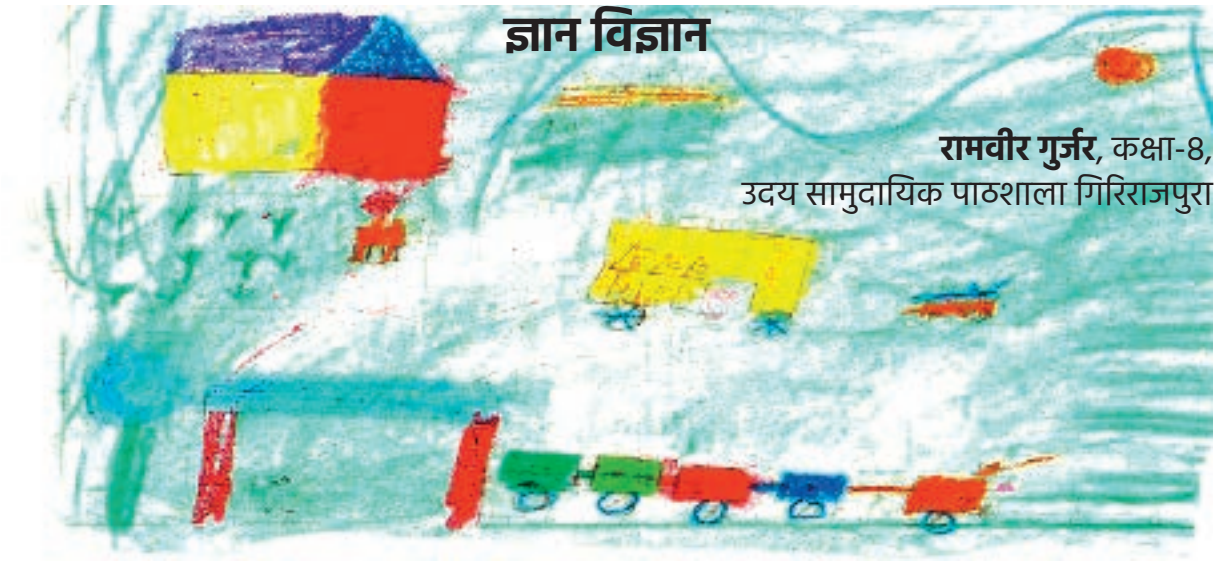

रामवीर गुर्जर, कक्षा-8,
उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

मैग्नीशियम

मेरा नाम रामवीर गुर्जर है। मेरी विज्ञान पढ़ने में बहुत रुचि है। मैं कक्षा-8 में पढ़ता हूँ। एक दिन विज्ञान की कक्षा में हम पदार्थ, धातु और अधातु पढ़ रहे थे। कक्षा में हमें मैग्निशियम के बारे में बताया गया, जो चमकिली धातु होती है। हमारे सर ने हमें बताया कि यह मैग्निशियम है, जब हम इसे जलाते हैं तो इसका चूरन बन जाता है। मैग्निशियम को हम उह कहते हैं। सर ने बताया यह व्2 यानी ऑक्सीजन से अभिक्रिया करता है तो इससे चूरण बनता है। इस चूरण का भी नाम है जिसे उहव मैग्निशियम ऑक्साइड चूरण कहा जाता है। सर ने यह क्रिया करने के लिए सबसे पहले मैग्नीशियम रिबन को कैंची की सहायता से काटा। इस पर एक चमकीली परत चढ़ी होती है। उसे रेगमाल से रगड़ा या घीसा। उसके बाद एक माचिस की तीली को जलाकर मैग्नीशियम रिबन को जलाया। उससे वह तेजी से जलने लगा और उसमें से धुँआ निकली एवं बाद में जब वह पूरी तरह से जल गया तो काँच की कटोरी में उसकी राख को एकत्रित कर लिया गया।

फिर सर ने बताया कि जब हम मैग्निशियम ऑक्साइड को भ्2व से अभिक्रिया कराते हैं तो यह मैग्निशियम हाइड्रॉक्साइड बन जाता है। जब मैंने पूछा कि मैग्निशियम ऑक्साइड को हमने भ्2व में क्यों अभिक्रिया करवाई तो सर ने समझाया कि हम देखेंगे और समझेंगे कि यह क्षार है या अम्ल। यह समझाने के लिए सर ने जब लाल लिटमिस पत्र पर मैग्निशियम हाइड्रोक्साइड की कुछ बूंदे डाली तो वह नीला हो गया। इससे हमें यह जाने को मिला कि यह क्षार है और हमने इससे बहुत कुछ सीखा। मुझे ये क्रियाकलाप करवाने से अच्छे से समझ में आ गया और मेरी अब मैग्निश्यिम, धातु और इसको जलाने पर जो उहव निकलता है इसके साथ-साथ हम क्रिया कलाप को आगे बढ़ाया तो मेरे अम्ल, क्षार भी समझ में आ गया।

रामवीर गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

जोड़ - तोड़

गणित का डर

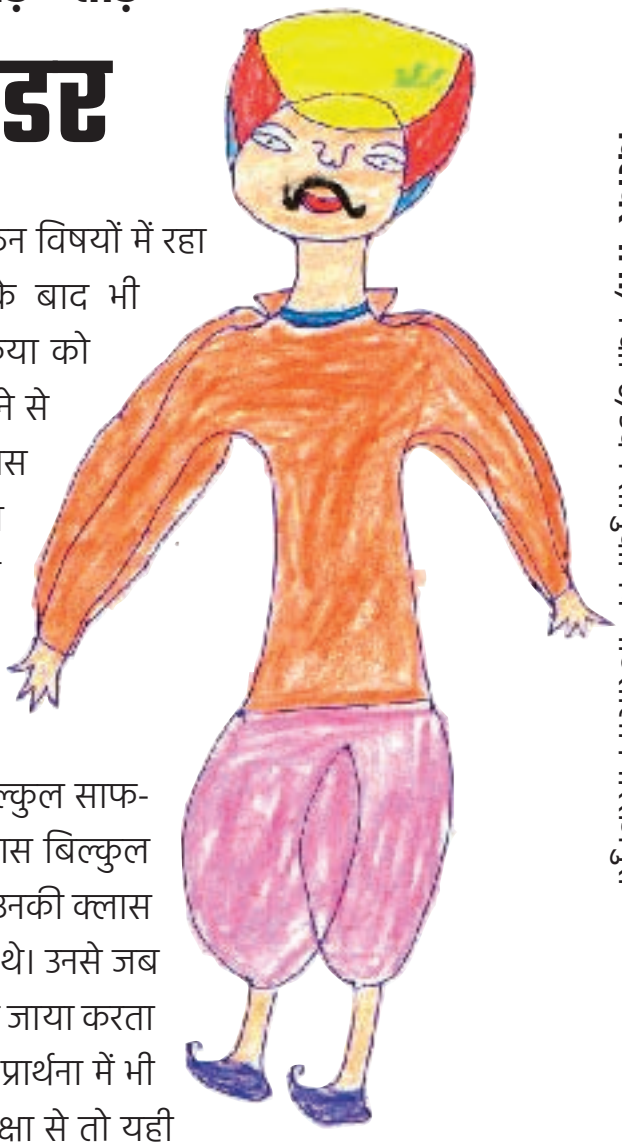

दिलबर मीना, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

शुरु से ही गणित मेरे लिए बहुत ही कठिन विषयों में रहा है। स्कूल में शिक्षक के अथाह प्रयासों के बाद भी संख्याओं को याद रख पाना या किसी संक्रिया को हल कर पाना मेरे लिए किसी पहाड़ पर चढ़ने से कम नहीं था। यह हाल तो चौथी-पांचवी क्लास का था। आगे जिस कक्षा में जाने वाला था उस कक्षा के नाम से ही मुझे डर लगता था क्योंकि उस कक्षा के कक्षा अध्यापक जो की गणित पढ़ाते थे उनका स्वभाव ही कुछ गुस्से वाला था। टेबल पर पतली डंडी अक्सर दिखाई देती थी जिसका कमाल भी मेरी कक्षा से बिल्कुल साफ-साफ दिखाई देता था। पांचवी और छठी क्लास बिल्कुल आमने-सामने के कक्षों में बैठती थी। हो न हो उनकी क्लास के बच्चे गणित में होशियार ही दिखाई पड़ते थे। उनसे जब मैं अपने आप को देखता तो मन ही मन दुखी हो जाया करता था। क्योंकि परीक्षाओं के कुछ ही दिन थे। मैं प्रार्थना में भी मन ही मन यही प्रार्थना करता था कि इस कक्षा से तो यही कक्षा अच्छी है, मैं फेल हो जाऊ, यही कामना थी। किन्तु सब कुछ उल्टा हुआ। परीक्षाओं के बाद जब परिणाम देखा तो तृतीय श्रेणी से पास हो गया। जब छुट्टियों के बाद स्कूल खुले तो पहले ही दिन हाजरी के बाद नो का पहाड़ा पूछ लिया। सब कुछ ठीक ही बताया केवल एक जगह ही तो अटका था फिर क्या था। जिस छड़ी का कमाल दूर से ही देखता था आज उसका कमाल प्रत्यक्ष में भी देख लिया, रोने तक नहीं दिया गया। मेरा यही हाल देखकर मेरे सहपाठी भी खुश ही दिखाई दे रहे थे। इसके बाद तो मैं स्कूल से कन्नी काटना भी सीख चुका था। चाहे कुछ भी हो जाए गणित की कक्षा या पहले क्लास में नहीं जाना। घर से तो बस्ता लेकर निकल ही जाता था किन्तु स्कूल नहीं पहुँचता था पर स्कूल की छुट्टी होते ही घर जरूर पहुँच जाता था। हालांकि यह ज्यादा दिन नहीं चल पाया क्योंकि अब मेरे बारे में सूचना घरवालों तक पहुँच चुकी थी। अब क्या पिटना तो घर पर भी तय हो गया। क्योंकि एक महीने तक स्कूल से गायब जो रहा। यह सब कुछ गणित और गणित की कक्षा की वजह से हो रहा था। इस एक डेढ़ माह की अवधि के दौरान हमारे गणित शिक्षक जी का स्थानांतरण भी हो गया था। कहते हैं कि दुःख के बाद सुख आता ही है इसलिए

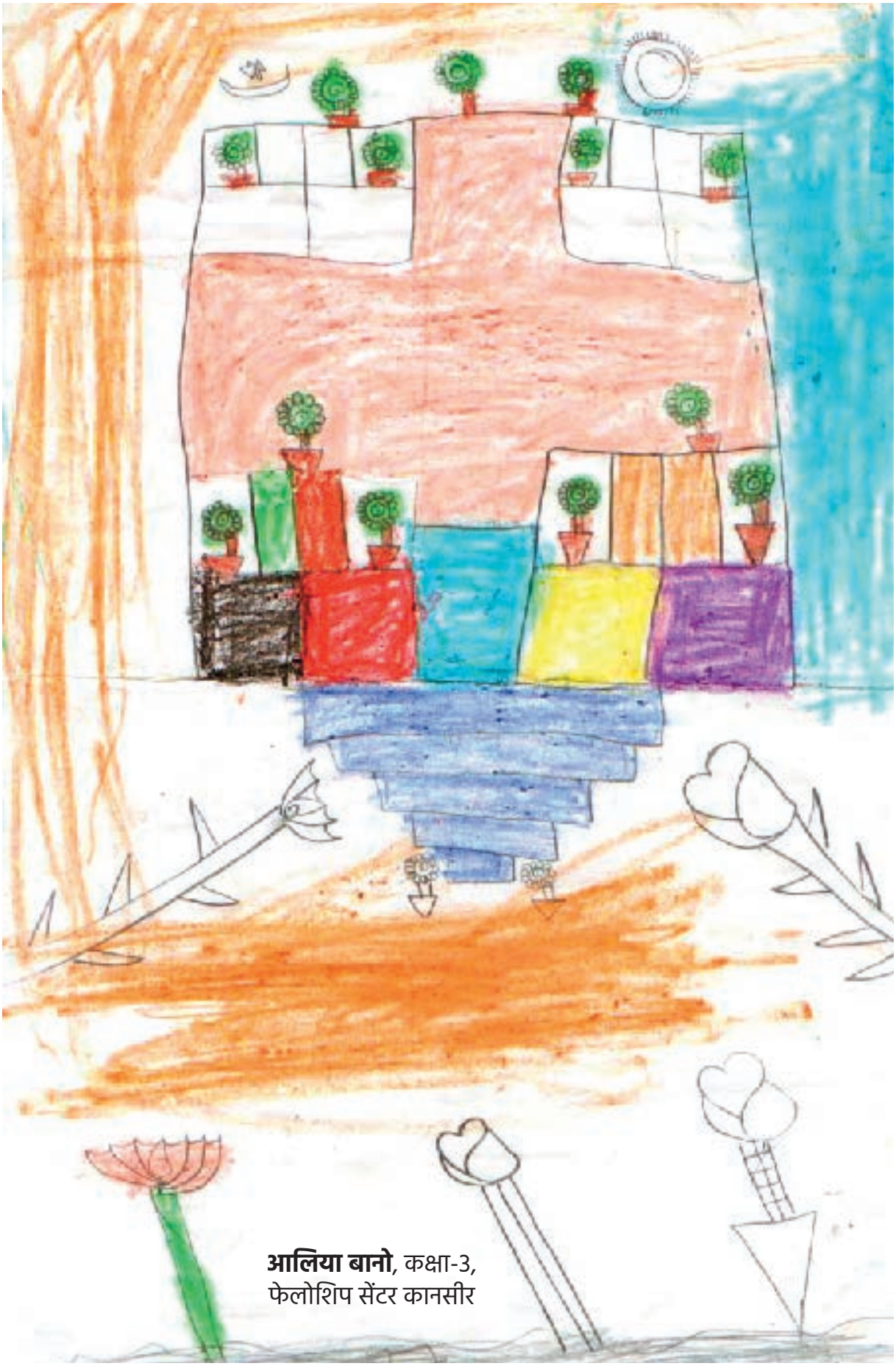

आलिया बानो, कक्षा-3,
फेलोशिप सेंटर कानसीर

कई दिनों के बाद खुशी का अहसास हुआ। अब हमारी नई कक्षाध्यापक एक शिक्षिका थी जो एक शांत, सरल और हंसमुख स्वभाव वाली प्रतीत हो रही थी। उन्होंने पहले दिन ही सभी बच्चों के नाम से परिचय किया और सभी बच्चों से गणित की पहेलियाँ, जोड़, घ्टाव, गुणा, भाग, भिन्न, दशमलव .. ऐसे कई सवाल मौखिक और लिखित में करवाए। शायद वो सभी बच्चों की गणित की स्थिति का आकलन कर रही थी। हालांकि मुझे अंदाजा था कि मेरा आकलन तो गणित में दस-बीस प्रतिशत ही रहा होगा। मन ही मन पुरानी बातें गणित के प्रति फिर से उभरने लगी थी। फिर से मन में डर के अंकुर फुट रहे थे किन्तु मैं जैसा सोच रहा था वैसा बिल्कुल भी नहीं हुआ। पीछे की सीट से मुझे शिक्षिका ने उठा के अपने पास में बिठा लिया और बड़े ही प्यार से उन्होंने मेरे सर पर हाथ फेरते हुए कहा कि तुम्हें मुझसे या गणित के सवाल नहीं आने पर डरने की जरूरत नहीं है अगर तुम्हें नहीं आता तो बिना डरे मुझसे पूछ लेना मैं तुम्हें एक बार नहीं कई बार समझाऊंगी। शायद वह मेरी मन स्थिति को समझ चुकी थी इसलिए सबसे पहले मेरे मन का डर कम करने की कोशिश की जा रही थी और ऐसा ही हुआ। अब मैं कभी भी कक्षा में नहीं होता तो शिक्षिका मेरे बारे में जरूर पूछती थी शायद मैं उनकी नजरों में गणित का कमजोर विद्यार्थी था। उन्होंने मुझे बेसिक चीजें गणना, जोड़, घटाओ, गुणा, भाग .... सिखाने से शुरुआत की और किसी बच्चे ने सवाल कैसे किया तो पता नहीं किन्तु मेरी नोटबुक हमेशा देखना नहीं भूलती थी। वो समझ जाती थी कि मुझे कहाँ समस्या आ रही है। उन्हें मुझे बिना बताये पुनः सिखाने की कोशिश की जाती थी। अब मुझे भी गणित के किसी सवाल को पूछने व बताने में कोई हिचकि-चाहट नहीं थी। कक्षा आठ में आते-आते मुझे गणित से इतना भय नहीं रहा था। शायद इसी से कक्षा आठ के परिणाम में विशेष योग्यता वाले विषय कोलम में गणित ही लिखा हुआ था। आगे भी इसी प्रकार संघर्ष जारी रहा। आज मैं ग्रामीण शिक्षा केन्द्र सवाई माधोपुर द्वारा संचालित उदय सामुदायिक पाठशालाओं के बच्चों के साथ शिक्षण कार्य कर रहा हूँ। यहाँ पर आकर विविध प्रकार की ट्रेनिंग, कार्यशालाओं में भागीदारी निभाई। यहाँ पर आकर जाना कि गणित ही नहीं अपितु किसी भी विषय को कैसे रुचिकर बनाते हुए शिक्षण करायें। बाल केन्द्रि नवचारात्मक शिक्षण विधाए यहाँ पर भरपूर मात्रा में दिखाई पड़ती हैं। छोटे-छोटे बच्चे अपने ज्ञान को व्यावहारिकता में स्कूल के किसी कोने में निर्भीक रूप से माप-तोल कार्य करते नजर आ जायेंगे। बच्चे छोटे-छोटे उपसमूह में किसी गणितीय विषय में गणना, संक्रिया, पहेलियाँ, मापन ... ठोस चीजों तीलियाँ, कंकड़, मोती, चार्ट, कार्ड, ग्राफ या शिक्षक द्वारा बनाई गई शिक्षण सामग्री के माध्यम से शिक्षण कार्य करते हुए नजर आते हैं। गणित की प्रकृति अमूर्त और तार्किक होती है जिसे बच्चे विद्यालय में अपने पूर्व ज्ञान को मूर्त, अर्धमूर्त चीजों से जोड़कर नए ज्ञान का अर्जन करते हुए अमूर्त में संक्रियाओं का सफर तय कर पाते हैं। यहाँ पर बच्चे गणित विषय में ज्यादा रुचि दिखाते हैं। मुझे खुशी है कि ग्रामीण शिक्षा केन्द्र में किसी भी बच्चे को गणित से डर नहीं लगता।

राजेश कुमावत, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

कलाकारी

पावभाजी

मैं कक्षा 7वीं में पढ़ता हूँ। मैं पहले पावभाजी बनाना नहीं जानता था। एक दिन हमारे सर ने हमें पावभाजी बनाना सिखाया। जिसमें की पाव का मतलब ब्रेड और भाजी का मतलब करी वाली सब्जी होती है। पाव भाजी के एक मात्रा में पाव (ब्रेड) के साथ भाजी (आलू आधारित करी जिसे धनिया, मिर्च, कटे हुए प्याज और नींबू के साथ बनाया जाता है। इसमें अलग-अलग तरह की सब्जियाँ भी डाल सकते हैं।) होती है। सबसे पहले हमने प्लेट में हरी मिर्च काटी फिर आलू काटे। आलुओं को पानी में उबलने के लिए हमने चूल्हे पर चढ़ा दिया। इसके बाद हमने पत्तागोभी, टमाटर और प्याज काटे। फिर एक कढ़ाई लाकर उसमें तेल डाला और तीन-चार मिनट बाद जब तेल पक गया तो हमने उसमें जीरे का तड़का लगाने के बाद मसाला (लाल मिर्च, हल्दी पाउडर, सूखा पीसा हुआ धनिया आदि) भी डाल दिया। थोड़ी देर बाद उसमें टमाटर डाले फिर प्याज और पत्तागोभी डाली। फिर उसमें उबले हुए आलू डाले और बहुत देर तक फ्राई किया। अब मसाला अच्छी तरह से पक चुका था और बहुत ही अच्छी महक आने लग गई थी। हमने कढ़ाई उतार दी फिर तवा रखकर उसमें घी डाला। घी डालने के बार हमने घी में पाव सेके। सेककर सभी को एक-एक पाव देकर उसमें भाजी डालकर दे दी फिर सभी को बाट देने के बाद सभी ने बाहर आकर मजे लेकर पावभाजी खाई। मैंने भी मजे से पावभजी खाई। तब से मैं यह सीख गया कि पावभाजी कैसे बनाते हैं।

तब्बसुम बानो, कक्षा-4,
फेलोशिप सेंटर कानसीर

अभिषेक गुर्जर, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

बात लै चीत ले

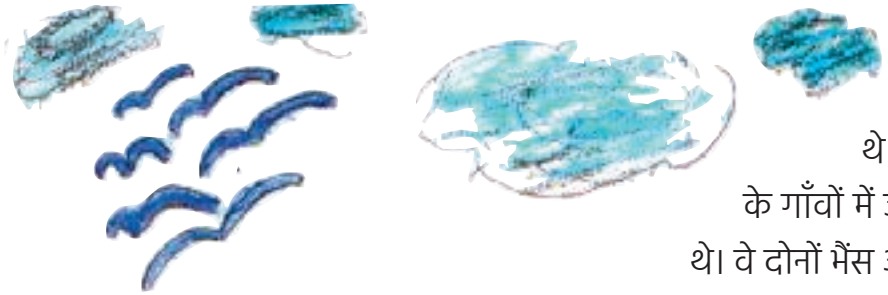

सेठ और व्यापारी

एक गाँव था। उस गाँव में दो व्यापारी रहते थे। वे दोनों आस-पास के गाँवों में जाकर व्यापार करते थे। वे दोनों भैंस आदि खरीदते-बेचते थे। एक दिन वे व्यापारी पास के अमनपुर गाँव में गये। अमनपुर गाँव में एक सेठ था। वह सेठ बहुत अमीर था इस कारण घमण्डी भी था। उसने अपनी भैंसों के गले में पीतल की घंटी बांध रखी थी। उन्होंने गाँव में जाकर सेठ से कहा, क्या आपकी भैंस बिकाऊ है? सेठ ने कहा पीछे बाड़े में बंधी हुई है, जाकर देख लो। उन व्यापारी ने बाड़े में जाकर खूब अच्छी तरह से भैंस देखी। एक व्यापारी की नजर बंधी हुई पीतल की घंटी पर पड़ी वह सोने जैसी लग रही थी लेकिन असल में वह पीतल की थी। उसने पीतल के ऊपर सोने का रंग करवा रखा था इस कारण वे दोनों चौंक गये और कहते हैं कि यह अमीर है इसके कारण सोने की घंटी बांध रखी है। उन दोनों ने भैंस लेने का फैसला कर लिया और इतने में घमण्डी सेठ आ गया। उसने कहा भैंस लेनी है तो लो नहीं तो जाओ। उन्होंने कहाए कि कितना दाम है। सेठ ने भैंस की कीमत दो लाख रूपये बताये। उन दोनों व्यापारी ने सेठ को 2 लाख रूपये दिये और भैंस को लेकर पैदल ही चल दिये। वे जंगल के रास्ते वापस

प्रियांशी वैष्णव, कक्षा-6, राजकीय विद्यालय कुतुलपुरा मलियान

पैदल जाते-जाते थक जाते हैं और एक पेड़ के नीचे रुक जाते हैं। तभी उनकी भैंस पेड़ से खुजलाती है इस कारण उसकी घंटी का रंग हट जाता है और वह पीतल की दिखने लगती है। वे दोनों हैरान हो जाते हैं। एक ने कहा कि 70 हजार की भैंस 2 लाख में दी, हमारे साथ धोखा हो गया। हम इसका बदला जरूर लेंगे।

सेठ से बदला लेने के लिए उन्होंने एक नाटक किया। वे बर्तन बेचने वाले बन गये। अमनपुर गाँव में वे उसी सेठ के पास गये। उस सेठ की औरत ने उन्हें रूकवाया और कहा मुझे चरी लेनी है उसने कहा मेरे पास चांदी की चरी है। वह व्यापारी मन में सोच रहा था कि सिल्वर की चरी के चांदी की पॉलिस कर दी है। उस सेठानी ने कहा कि मुझे दे दो, कितने की हैं? व्यापारी ने कहा तीन लाख रूपये की है। उन्होंने सेठानी को चरी दी और पैसे लेकर आ गये। सेठ ने कहा जा इसमें पानी भर ला। वह तो पानी भरने चली गई और सेठ बैठा हुआ हस रहा था कि 70 हजार की भैंस 2 लाख में बेच दी है मजा आ गया। वह सेठानी पानी भरकर आ रही थी तो रास्ते में चरी फिसलकर गिर गई और चरी पर से चांदी की परत हट गई उसने घर आकर तुरंत यह बात सेठ को बताई। यह बात सुनकर सेठ को बहुत दुख हुआ और तब से ही उसका सारा घमण्ड चूर-चूर हो गया। उसने मन ही मन निश्चय किया कि आगे से मैं किसी के साथ धोखा नहीं करूंगा।

चेतराम गुर्जर, कक्षा-7, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

शमशेर बैरवा, कक्षा-6, गवर्नमेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल पालीघाट

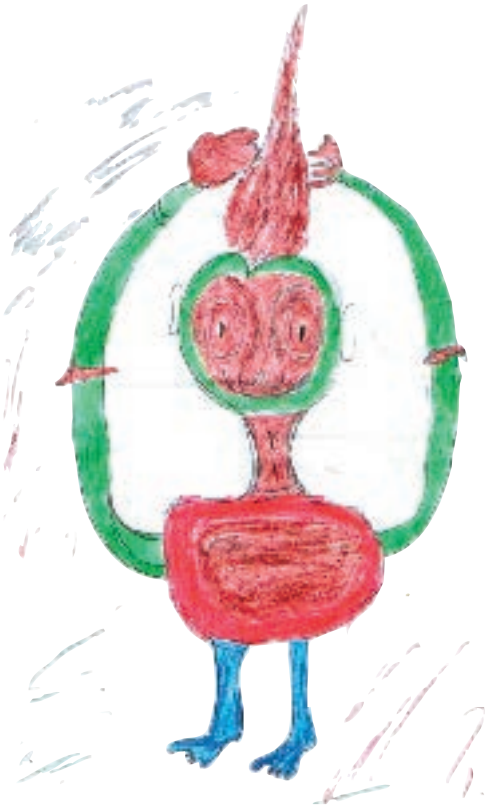

नरेन्द्र नायक, कक्षा-6, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

माथा पच्ची

1. वह क्या है जो सदियों पुराना है
   लेकिन हर महिने नया है?
2. English में E के बाद क्या आता है?
3. चार चोंच की चिड़िया सात समुन्दर कूदगी जब
   भी पानी मांगे, बताओ क्या?
4. काला ऊपर, काला नीचे,
   बीच में हवा बताओ क्या?
5. पीड़ी चिड़िया, औंधी झूले, बताओ क्या

बलवीर गुर्जर, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा।

हीहीही-ठीठीठी

मैडम - सभी बच्चे कल कुत्ते पर निबन्ध लिखकर लायेंगे।

(दूसरे दिन)

मैडम - सोनू, क्या तुम कुत्ते पर निबन्ध लिख लाये?

सोनू - नहीं मैडम, जैसे ही मैंने कुत्ते पर निबन्ध लिखने के लिए पेन रखा कुत्ता भाग गया, इसलिए मैं कुत्ते पर निबन्ध नहीं लिख सका।

रामभजन योगी, शिक्षक,
उदय सामुदायिक पाठशाला
गिरिराजपुरा

मुस्कान, उम्र-9, बावरी बस्ती

कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ

कोमल, उम्र-10,
उदय सामुदायिक पाठशाला कटार

काजू पिस्ता और बादाम

खाकर हो गया पहलवान ...

हर्षिता बैरवा
कक्षा-5, उदय सामुदायिक पाठशाला कटार
के द्वारा शुरु की गई कविता को
पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

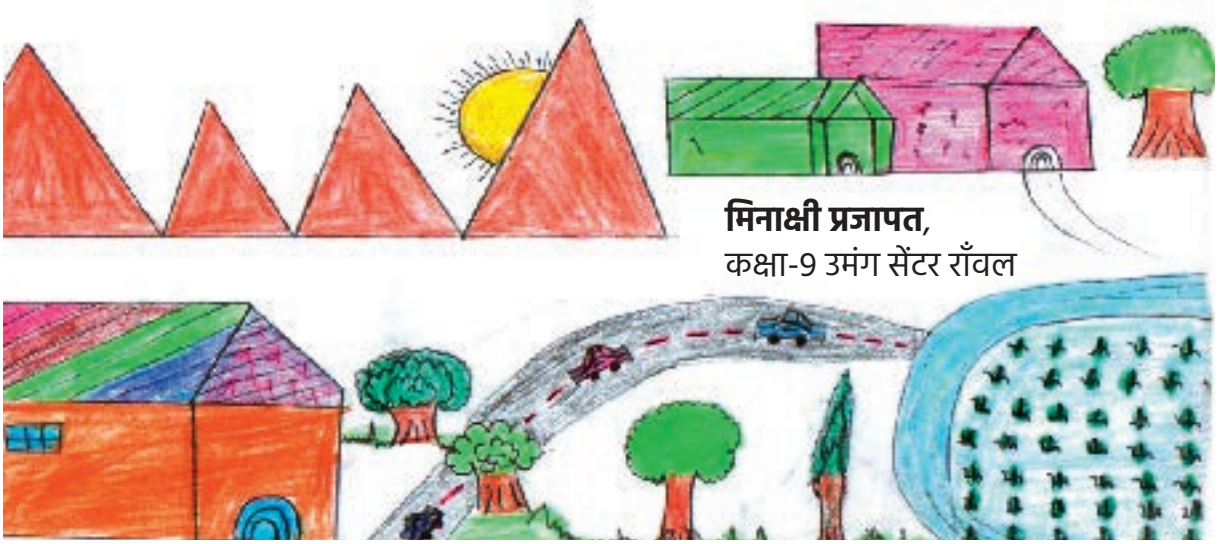

मिनाक्षी प्रजापत,
कक्षा-9 उमंग सेंटर राँवल

एक गाँव था। उस गाँव में एक राजमहल था। उस गाँव के लोग राजा की बात मानते थे, लेकिन राजा बिल्कुल ही कंजूस था। गाँव वालों से अनाज लेकर अपने महल में रख लेता था। इस तरह बहुत दिन निकल गये तो गाँव में अनाज की कमी आने लगी। एक दिन सभी गाँव वाले मिलकर राजा के पास गये और ....

प्रिंस मीना, कक्षा-8, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा के द्वारा शुरु की गई कहानी को पूरा करो और **मोरंगे** को भेजो।

प्रियांशी गौड़, फेलोशिप सेंटर राँवल

पहेलियों के ज़वाब -

1. चाँद 2. N 3. रई 4. टायर 5. मुरकी

अलसमा बानो, कक्षा-5,
फ़ेलोशिप सेंटर कानसीर